Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

# नवगीत एक पहचान

**डॉ0 राजेश कुमार मिश्र**
**सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,**
**मर्यादा देवी कन्या पी0जी0 कालेज,**
**बिरगापुर, हनुमानगंज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश,भारत।**

**Article Info**
Volume 3 Issue 6
Page Number: 08-11
Publication Issue :
November-December-2020

**Article History**
Accepted : 10 Nov 2020
Published : 20 Nov 2020

**सारांश–** नवगीत का काल 1955 से आरंभ होता है। ड़ा0 राजेन्द्र सिंह द्वारा सम्पादित गीतांगिनी की भूमिका में नवगीत का उल्लेख मिलता है। परिवर्तन को पूरी तरह आत्मसात करते हुए मध्यवर्गीय, चिंतनशील समाज को इसमें चित्रित किया गया है। एक संतुलित अभिव्यक्ति के साथ काल को उसके अनुरूप रुपायित करने वाली कविता ही हर काल में प्रासंगिक होती है। इस काल के गहन बोध को नवगीत में अभिव्यक्ति मिली है।सन्–1980 का दशक यदि नई कविता के चरमोत्कर्ष का काल था तो नवगीत भी एक पर्याप्त परिवर्तित विकसित अवस्था के काल पर अपने अधिपत्य की घोषणा कर रहा था क्योंकि इसमें रचनात्मकता थी और सार्थकता भी ,जो कविता के सभी गुणों से परिपूर्ण थी। ''वास्तव में नवगीत काल चेष्टा की ऐसी चाहना है, जिसें तर्कना से नही पाया जा सकता। यह चाहना तर्कना के तल पर आकर भी कमजोर नही होती वरन् अधिक

**मुख्य शब्द –** दुर्निवार हो जाता है, वह चाहना में अंतर्भुक्त होकर स्वयं ही उत्प्रेरित होती रहती है, वैसे ही जैसे कोई कस्तूरी मृग उन्मादित होता रहता है।''[1]

''इस विधा का काव्यक्षेत्र अत्यन्त व्यापक और बहुरंगी है इसके अनेक स्वर है, जो सामाजिक, राजनैतिक , आभिव्यक्ति के साथ–साथ दार्शनिक और प्रेमानुभूति को भी अनुरंजित, आह्लादित करते है– इसके बावजूद जो स्वर सबसे प्रखर उदात्त और इरादों से भरपूर है, वह स्वर समसामयिक जीवन जीने के संघर्ष का है।''[2] वही नवगीत में भारत की प्रकृति है और सस्कृति भी जिसके मेल से भारतीयता बनती है। इसलिए इसके चिंतन में यदि एक ओर देशज गंध है तो दूसरी आंचलिक सौन्दर्य है। यदि एक ओर सामाजिक जीवन का परंपरा बोध है तो दूसरी ओर समाज की समकालीन चेतना। आज नई कविता और नवगीत में जो पार्थक्य है वह कविता कें संगीत विहीन हो जाने के कारण। कविता अपनें आदि उद्गम में संगीत के साथ थी। कविता में छंदहीनता कें प्रचलन कें पूर्व छंद की लय ही कविता की लय थी। वस्तुतः छंद हिन्दी कविता का कल्पवृक्ष रहा है। किन्तु रीतिकाल की अस्वाभाविकता में छंद संकुचित होता चला गया। कदाचिद् अपनी अधिक मुखरत के लिए नई कविता नें –गद्य का रूपधारण किया हो जिसके कारण कविता प्रयोगवादी या नई कविता बनकर अपना धर्म भूल गई। ''नवगीत नई कविता नही है, मगर कविता है, कविता के अंतर्गत एक विधा है। आज नवगीत ने अपनें शब्दों, बिम्बों प्रतीकों, मुहावरों कें विशिष्ट प्रयोग एंव नए शिल्पविधा सें सभी क्षेत्रों को विकसित और उर्वर किया है। नवगीत आधुनिकता के सारे उपादनों आसंगो के प्रति आस्थावान होकर

**Copyright : ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अपनी माटी कें प्रति अत्यंत संवेंदनशील है। आज के वस्तुवादी युग में नई कविता का लोकांचल और प्रकृति से मोहभंग होता जा रहा है, किन्तु नवगीत में देशज मोह तथा प्रकृति और लोकंचल के लिए गहरी संवेदना है। नवगीत नें लोकगीतों के ब्यापक आयाम को अपनी प्रक्रिया में लाकर अधिक अंनुरंजित किया है। अतीत और वर्तमान को गूंथकर एक ऐसे लोक का निर्माण किया है। जिससे संवेदना और समझ एकमेव जान पड़ती है।''[3]

नवगीत कविता हैं। इसमें छंद , लय, और संगीत स्वाभाविकता के साथ उपलब्ध है। किंतु संगीत को कविता के संदर्भ में अन्य विषय माना गया है। नवगीतकारो ने संगीत और कविता को संयुक्त किया । नवगीत दशक –1 की भूमिका में रामकिशोर दहिया ने नवगीत वार्ता–3 जून 2018 को कहा– ''नवगीत पूर्णतः निंबधधर्मी काव्य है उसकी बुनावट बिम्बों के ताने बाने से हुई है। –– नवगीत अनुशासित लयात्मक और नाद योजना को भारतीय काव्य परम्परा के महत्तर दाय के रूप में स्वीकार करता है। – नवगीत की विशेषता यह है कि उसमें लयात्मकता की नवीन संभावनाओं की खोज और उपलब्धि की गई है।''[4] ''नवगीत दशक–2 को भूमिका में लिखा है ''हिन्दी गीत विधा की वर्तमान धारा का नाम नवगीत है। नवगीत भारतेन्दु युग से चली आती उस गीत परम्परा कि सज्ञां है जो प्रारम्भ से ही लोक जीवन से संपृक्त थी और युग बोध से उत्तरोत्तर परिपुष्ट होती रही।''[5] समकालीन नवगीत :संवेदना और सृजन की भूमिका मे ड़ा ओमप्रकाश सिंह पारंपरिक गीत और समकालीन नवगीत के अन्तर को स्पष्ट करतें है ''गीत भाव या हृदय प्रधान है और विचार या बुद्धि गौड़ है परन्तु नवगीत में हृदय और विचार या भाव विचार में सामजस्य दिखाई पड़ता है। पांरपरिक गीत आदर्श प्रधान है यथार्थ सहायक है, परन्तु समकालीन नवगीत मे यथार्थ भी प्रधान है, और आदर्श सहायक।''[6]

नवगीत में सांकेतिकता अर्थंब्यंजना को विस्तार देने में कही उपयुक्त है। नवगीत में सर्म्पूण जीवन की संवेदनाओ विसंगतियों की अभिव्यक्ति एवं सामाजिक सरोकार केन्द्र में है। ड़ा ओमप्रकाश सिहं जी लिखतें है 'नवगीत अपनी परंपरा में गीत की ही संतान है, गीत का बेटा। जैसें दोवट वृक्ष है एक पुराना एक नया ,एक अपनी जड़ो शाखा, पत्तो ंसे अपने आकार से पुराना है, दूसरी ओर ताजी शाखों पत्तों, फल फुलों का मल सुंदर और युग बोध लेंकर खड़ा है। दोनो कें मध्य एक पीढी का अन्तर है, दैहिक और चिंतन के स्तर पर। गीत में मनुष्य के दैहिक जीवन कि प्रधानता है नवगीत में उसका सामजिक सारोकार अधिक मुखर हुआ है।''[7] गीत नें अपनी परंपरा से जुड़कर प्रेम , करूणा, सहयोग, लोक कल्याण और मानवता की अभिव्यक्ति की है, तो नवगीत नें उसके आगे वैश्वीकरण, बाजारवाद, वैज्ञानिक बोध, जीवन मूल्यों कक्षरण, जातीय एवं सांप्रदायिक विद्वेष आतंकवाद आदि पर न सिर्फ अपनी चिंताओं को उजागर किया है, अपितु दुनिया को बेहतर बनाने के लिए जरूरी संघर्ष का आहवाहन किया है। .... इसमे संक्षितता, सांकेतिकता, मानवीकरण, यथार्थबोध, बिंबोकी नवीनता मिथकों–प्रतीकों के प्रयोग, सामान्य बोल चाल की भाषा, आंचलिकता आदि को प्रधानता दी गई है।''[8]

नवगीत के शिल्प पर गेयता के अभाव का आरोप है पर शिवदान सिंह सहयोगी नवगीत मे छन्दमुक्तता छम्य मानते हैं पर छन्दहीनता नहीं। गेयता को भंग नही होंना है यही उनकी मान्यता है। ''नवगीत नयी अनुभूतियों की प्रक्रिया में संचयित मार्मिक सकग्रता का आत्मीयता पूर्ण स्वीकार होगा। जिसमें अभिव्यक्ति के आधुनिक निकायों का उपयोग और नवीन प्रविधियों का संतुलन होगा।''[9] नयी कविता के सात मौलिक तत्व है– ऐतिहासिकता, सामाजिकता,

व्यक्तित्व, समाहार समग्रता, शोभा और विराम तो नवगीत के पाँच विकासशील तत्व है– जीवन दर्शन, आत्म–निष्ठा, व्यक्ति बोध, प्रतीतत्व और परिसंचय।

गीतांगिनी की भूमिका में प्रकाशित नवगीत के इस मैनीफेस्टो को वासन्ती पत्रिका नयेगीत नये स्वर लेखमाला (1961–1962) में डा0 शम्भूनाथ सिंह ने लिखा– गीत रचना की परम्परा पद्धति और भावबोध को छोड़कर नवीन पद्धति और विचारों के नवीन आयामों तथा नवीन भावों को अभिव्यक्त करने वाले गीत जब भी जिस युग में लिखे जाऐंगें नवगीत कहलाएगें।''[10] (पंख–पंख आसमान शांति सुमन प्रथम संस्करण 2012) में शांति सुमन मानती है मेरे ये गीत भाव भीगे छणों के हल्के फुल्के और भारी भरकम छणों के गीत किसी युगों के लिए सेमल के मूल नहीं हैं। उनमें मध्यवर्गीय भाव चेतनाओं का उतार चढ़ाव यत्र–यत्र सर्वत्र मिलेगा और धरती की बातों से धरती की गंध मिलते ही आप यह महसूस करेंगे कि इन गीतों में कुछ है, जो आपको बार–बार छू जाता है इस छुवन के पीछे इन नवगीतों में न केवल मध्यवर्गीय ऊब, कुण्ठा, घुटन, पीड़ा, विवशता शैथिल्य है अपितु हृदय और बुद्धि का असमांजस्य व्यवहार एवं आदर्श का वैषम्य एवं टुकड़े–टुकड़े होकर बँटे व्यक्ति के बाहरी दबाव भी हैं।''[11] समग्र चेतना के नवगीत विशेषांक में नवगीत और उसका युग बोध में– गीतकार देवेन्द्र शर्मा जनगीत, नवगीत व मंचगीत जैसे शब्दों को एक ही मानकर वितण्डनवाद फैलाया। ''गीत, नवगीत और जनगीत की रचना दृष्टि रचनात्मक उद्देश्य वैचारिक अर्न्तवस्तु प्रभावी अर्न्तवस्तु और मूल्य दृष्टि में गुणात्मक अन्तर होता हैं। एक नवगीतकार समाज के सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन के अंतर्विरोधों विसंगतियों और विडम्बनाओं को उसकी नियति मानकर निष्क्रिय हो जाता है, यानी वह यथास्थितिवाद का पोषण करने लग जाता है।''[12] नवगीत के प्रमुख हस्ताक्षर तृतीय अध्याय में लिखा है– गीत का नवीन संस्करण नवगीत है। नवगीत में कवि प्राचीनतम् भावनाओं की केंचुल छोड़कर जीवन के कर्म क्षेत्र से पलायन नहीं करता बल्कि यथार्थ का सामना करते हुए संघर्षों के धुन्ध को चीरने की तीव्र भावना से लालायित कुछकर गुजरने का संकल्प लेता हुआ दिखाई देता है। जीवन के प्रति उसको यथार्थ संकल्पनात्मक दृष्टि स्वस्थ स्वाभाविक सौन्दर्य बोध को जन्म देती है। अस्वस्थ वीतराग को मन की पलायनवादी वृत्तियों का विकृत संगीत इन गीतों को मूल चेतना से कोसों दूर है। नवगीत दशक की भूमिकाओं में डा0 शम्भूनाथ सिंह ने स्पष्ट किया कि नवगीत न कभी काव्यांदोलन था, न आज है न तो वह कविता का जुड़वा भाई है। नवगीत दशक 3 में उन्होंने लिखा नवगीत वर्तमान हिन्दी कविता की वह प्राणवान धारा है जो हिन्दी कविता का भविष्य निर्धारित कर सकेगी। देवेन्द्र शर्मा इन्द्र नवगीत के प्रमुख हस्ताक्षर है उनके नवगीतों का धरातल आत्म केन्द्रित नहीं है अपितु वैयक्तिक कुण्ठा प्रतिनिवेदन प्रकृति चित्रण की जमीन तोड़कर जीवन के कटु एवं वास्तविक सत्यों को आधुनिक संवेदना से जोड़कर पेश करता है। दैनिक जीवन की विद्रूपताओं विसंगतियों के नंगेपन को व्यक्त करने के लिए गीतकार ने व्यंग्य का तेवर अख्तियार किया है। देवेन्द्र शर्मा की भाषा अधिक समृद्ध है। काव्य के अनुरूप भाषा का रूप भी बदलता जाता है। उनकी भाषा में सपाट बयानी भी है और लक्षणा व्यंजन का आध्यारोपण भी किन्तु वह नयी कविता की समाज शैली व बड़बोलेपन से तथा छायावादी शैली से सर्वदा भिन्न है।

हिन्दी नवगीत में सामाजिक जीवन दृष्टि और लोक संवेदना में लेख लिखा है भारतीय जन की बाहरी दुनिया में हुए तेजी से बदलाव के फलस्वरूप व्यक्ति की आन्तरिक टूटन और चिरपरिचित लोक से बिछुड़ने का विवश संत्रास

नवगीत में अभिव्यक्त हुआ है। लोक के प्रति सच्चा व गहरा भावबोध नवगीतकार की असल पहचान है। लोक एक वृहत्तर परिवेश व्याप्त अभिधा है जो आंचलिक जन–जीवन की सीमाओं को लांघकर राष्ट्रीय नगरों व महानगरीय इकाईयों तक परिव्याप्त है। नवगीतकारों ने अपनी स्मृतियों में खोये हुए गांवों को तलाशने की कोशिश की है, खाली होते गांव के दर्द को गांव से शहर आ बसे मन की पीड़ा को गीतकार विनोद निगम ने स्वर दिया अपने पगडंडी को छोड़ जाने मै कहां चला आया। नवगीतकारों का मन तो शहरवासी होने पर भी गांव में रमा है लेकिन उन्हें दुख है कि जो गांव कभी भाई–चारे और अपनेपन के प्रतीक थे उनमें बिखराव आ गया है। आज गांव के लोगों के मन में अविश्वास पैदा हो गया है और सन्देह ने जन्म ले लिया है। गांव का अपनापन आत्मीयता धीरे–धीरे खोने लगी है। पारिवारिक विघटन यहां भी होने लगा है, नवगीतकारों की चिन्ता यही है। ''यह स्वीकार करने में कोई आश्चर्य नहीं है कि हिन्दी कविता की ही तरह साहित्य की इस विधा को भी वादों और विवादों में कसने का प्रयत्न बराबर होता रहा है। कभी इसे गीत कहा गया तो कभी नवगीत, कभी अगीत के नाम से भी परिभाषित किया गया तो कभी जनगीत के नाम से, पर तमाम अंर्तविरोधों के बावजूद अपनी उपस्थिति गीत ने जनमानस में वर्तमान बनाए रखा है। जिस प्रकार कविता के पारंपरिक उपमानों, प्रतिमानों एवं स्थापनाओं से विद्रोह करते हुए कवियों ने नई कविता की नींव रखी उसी तर्ज पर गीत के पारंपरिक ढाँचे में परिवर्तन की मांग को रखते हुए नवगीत को आधारशिला रखी गयी।''[13]

## सन्दर्भ


1. पत्रिका–भाषा जुलाई अगस्त 2019 क्रमांक 16 पेज 10
2. पत्रिका–भाषा जुलाई अगस्त 2019 क्रमांक 16 पेज 10
3. पत्रिका–भाषा जुलाई अगस्त 2019 क्रमांक 16 पेज 11
4. नवगीत दशक –1 की भूमिका नवगीतवार्ता 3 जून 2018
5. नवगीत दशक –1 की भूमिका नवगीतवार्ता 3 जून 2018
6. नवगीत दशक –1 की भूमिका नवगीतवार्ता 3 जून 2018
7. नवगीत दशक –1 की भूमिका नवगीतवार्ता 3 जून 2018
8. नवगीत दशक –1 की भूमिका नवगीतवार्ता 3 जून 2018
9. नये गीत का उद्‌भव और विकास– रमेश रंजक संस्करण 2002
10. बासन्ती पत्रिका नयेगीत नयेस्वर लेखमाला (1961–1962) डा0 शम्भूनाथ सिंह
11. पंख–पंख आसमान पुस्तक शान्ति सुमन प्रथम संस्करण 2004
12. समग्र चेतना का नवगीत विशेषांक नवगीत और उसका युगबोध पृ 12
13. लेख हिन्दी नवगीत परम्परा एवं विकास MONDAY 11 APRIL 2016,